

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 4, मार्टिन लूथर से जॉन कैल्विन तक

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह मार्टिन लूथर से जॉन कैल्विन तक का सत्र 4 (सत्र 3 गायब है) है।

दरअसल, शुक्रवार को, मैं कुछ पढ़कर शुरुआत करना पसंद करता हूँ।

आमतौर पर, यह किसी ऐसी चीज़ से संबंधित भक्तिपूर्ण बात होती है जिसका हम अध्ययन कर रहे होते हैं। लेकिन आज, यह जॉन के सुसमाचार, अध्याय 5 से है। इसलिए, मैं शुक्रवार या बुधवार को हमें शुरू करना चाहूँगा यदि हम शुक्रवार को भोजन कक्ष में हों। लेकिन मैं बस हमें किसी ऐसी चीज़ के बारे में भक्तिपूर्ण विचार से शुरू करना चाहूँगा जिसका हम इस समय अध्ययन कर रहे हों।

आज, यह यूहन्ना 5 है, और मैं इसे 519 पर पढ़ने जा रहा हूँ। हम व्याख्यान में इसका उल्लेख करेंगे, इसलिए मैं इसे पढ़ रहा हूँ। यीशु ने उनसे कहा, सच-सच, मैं तुमसे कहता हूँ, बेटा अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता, बल्कि केवल वही करता है जो वह पिता को करते देखता है।

क्योंकि जो कुछ वह करता है, वही पुत्र भी करता है। क्योंकि पिता पुत्र से प्रेम रखता है और जो कुछ वह करता है, वह सब उसे दिखाता है। और इन से भी बड़े काम वह उसे दिखाएगा, कि तुम अचम्भा करो।

क्योंकि जैसे पिता मरे हुएों को जिलाता है और उन्हें जीवन देता है, वैसे ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जीवन देता है। पिता किसी का न्याय नहीं करता, बल्कि न्याय करने का सारा काम पुत्र को सौंप दिया है, ताकि सभी लोग पुत्र का आदर करें, जैसे वे पिता का आदर करते हैं। जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का आदर नहीं करता, जिसने उसे भेजा है।

मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनता है और मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, उसका अनन्त जीवन है। उस पर न्याय नहीं होता, बल्कि वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर चुका है। तो, यूहन्ना के सुसमाचार से, और इसका आज हम जिस बारे में बात कर रहे हैं, उससे कुछ लेना-देना होगा।

अगर इससे मदद मिले तो मैं पाठ्यक्रम के पेज 12 पर हूँ। और हम लेक्चर 1 पर हैं, मध्यकालीन रोमन कैथोलिक धर्म और औचित्य की प्रकृति। और हम, जैसा कि हमने कहा है, हम यहाँ एक पहेली को एक साथ रखने की कोशिश कर रहे हैं।

भगवान आपका भला करे। एक बार जब हम पहेली को चारों भागों में एक साथ देख लेते हैं, तो हम पीछे खड़े होकर मध्ययुगीन दुनिया में रोमन कैथोलिक धर्म की तस्वीर देख सकते हैं, जिसे आज के रोमन कैथोलिक धर्म से भ्रमित नहीं होना चाहिए। तो, ठीक है।

तो, हम यहीं पर हैं। और हम भोग-विलास की कहानी के मामले में सही थे। और हम भोग-विलास की कहानी के अंत के करीब हैं।

तो, बस एक याद दिला दूं, हमने बताया कि पोप लियो एक्स कितने बुरे थे। वह वाकई एक बुरे आदमी और एक अविश्वसनीय व्यक्ति थे। और जब वह पोप बने, तो उन्हें इसकी ज़रूरत थी, वैसे, वह एक बहुत अमीर, प्रभावशाली परिवार से थे।

जैसा कि हमने बताया, वह पादरी बनकर नहीं आगे बढ़ा। जब वह पोप बना, तो पोप का खजाना जंगली पार्टियों और उसके आलीशान रहन-सहन और हर चीज में खत्म हो गया था। और अब उसे अपने लिए और सेंट पीटर बेसिलिका के लिए पैसे जुटाने हैं।

इसलिए, वह पूरे देश और यूरोप में भोग विक्रेताओं को भेजता है और वह कम कीमत पर पूर्ण भोग बेचता है। अब, फ्रायर टेड्जेल विटेनबर्ग में समाप्त होता है, और बेचारे फ्रायर टेड्जेल मार्टिन लूथर नामक एक व्यक्ति के क्रोध का सामना करते हैं, जो विटेनबर्ग में पढ़ाते थे। तो, हम उस कहानी के बीच में हैं।

हमें उस कहानी को खत्म करना है, और फिर हमें यह देखना है कि रिफॉर्मेशन इस सब पर कैसे प्रतिक्रिया करता है, जो हमारी रूपरेखा में नंबर 85 है। लेकिन चलिए कहानी को खत्म करते हैं। तो, यहाँ मार्टिन लूथर की एक तस्वीर है और वह विटेनबर्ग में चर्च के दरवाजे पर अपनी 95 थीसिस को कील से चिपका रहा है और थीसिस नंबर, क्या, थीसिस नंबर 86 है।

ओह, वैसे, 95 थीसिस वास्तव में भोग के मुद्दे के इर्द-गिर्द घूमती हैं। तो, भोग के बारे में बहुत सारी बातें चल रही हैं। तो, यहाँ एक उदाहरण है: थीसिस नंबर 86: इस दिन पोप की संपत्ति सबसे अमीर करोड़पतियों की संपत्ति से कहीं ज़्यादा है।

इसलिए, क्या वह अपने पैसे से सेंट पीटर का एक भी बेसिलिका नहीं बनवा सकता, बजाय इसके कि वह वफ़ादार गरीबों के पैसे से बनवाए? तो, इन सिद्धांतों को चर्च के दरवाजे पर कील ठोक दिया गया है और गरीबों का बचाव किया जा रहा है, वैसे, ऐसा किया जा रहा है। अब, इस घटना के साथ क्या हो रहा है? मुझे डर है कि चर्च के इतिहास में इस घटना की गलत व्याख्या की जाएगी। और अक्सर, शायद आपके चर्च में रिफॉर्मेशन संडे के दिन, यह बहादुर मार्टिन लूथर के बारे में बात करता है और यह विरोध का एक कार्य है।

वह यहाँ विरोध कर रहा है, वह अपने सिद्धांतों को दरवाजे पर ठोक रहा है और इस तरह सुधार शुरू हो गया। खैर, यह बिलकुल वैसा नहीं था। यह एक अच्छी कहानी है, लेकिन इसके पीछे कोई सच्चाई नहीं है।

मार्टिन लूथर जो कर रहे हैं, वह मध्ययुगीन दुनिया में बहुत आम है। वह धर्मशास्त्र के प्रोफेसर हैं, धर्मशास्त्र पढ़ाना उनका काम है, और विश्वविद्यालय में सार्वजनिक रूप से धर्मशास्त्रीय मुद्दों पर बहस करना उनका काम है। जब धर्मशास्त्र का शिक्षक कुछ शोधों पर चर्चा करने के लिए तैयार होता है, तो वह उन्हें चर्च के दरवाजे पर कील से चिपका देता है क्योंकि चर्च का दरवाजा

विश्वविद्यालय के लिए बुलेटिन बोर्ड की तरह था, क्योंकि विश्वविद्यालय चर्च के बगल में चर्च में और बाकी सब चीजों में स्थित था।

तो, यह चर्च ही था जो विश्वविद्यालय को नियंत्रित करता था। इसलिए, यह विरोध का कार्य नहीं है। उनका रोमन कैथोलिक चर्च के खिलाफ विरोध करने का कोई इरादा नहीं है।

वह एक अच्छे रोमन कैथोलिक हैं, लेकिन वह धर्मशास्त्र के शिक्षक हैं, और यह उनका काम है। इसलिए, वह इन 95 थीसिस को पोस्ट करके और इन थीसिस के बारे में खुली चर्चा करके अपना काम कर रहे हैं क्योंकि इसी तरह आप धर्मशास्त्र सीखते हैं। इसलिए, यह विरोध का कार्य नहीं है।

वे लैटिन में लिखे गए होंगे क्योंकि लैटिन विश्वविद्यालय की भाषा थी, लेकिन उनका जर्मन में भी अनुवाद किया गया होगा। मार्टिन लूथर के इतने प्रसिद्ध होने का एक कारण यह है कि, जिस समय लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की धार्मिक जांच करने का अपना काम शुरू किया था, उस समय प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार हुआ था। लूथर की रचनाएँ छपती हैं, और फिर लोग उन्हें देख सकते हैं, जिसमें पोप भी शामिल हैं, और उन्हें यह बिल्कुल भी मज़ेदार नहीं लगा।

तो, यहाँ पर भोगों के बारे में उनका तर्क ही मायने रखता है। ठीक है, अब मैं सिर्फ़ एक बात कहना चाहता हूँ। यहाँ 95 थीसिस में एक धार्मिक तर्क दिया जा रहा है, लेकिन कृपया ध्यान दें कि यह चर्च के लिए एक आर्थिक समस्या भी है।

वह सिर्फ़ उनके धर्मशास्त्र को चुनौती नहीं दे रहा है, बल्कि एक आर्थिक समस्या भी पैदा कर रहा है। क्योंकि अगर पूरे देश में भोगों की बिक्री से मिलने वाला पैसा खत्म हो जाता है, तो चर्च, लियो के पास अपने खजाने के लिए या सेंट पीटर्स बेसिलिका बनाने के लिए ज़रूरी पैसा नहीं होगा। तो, यहाँ सिर्फ़ शुद्ध धर्मशास्त्र ही नहीं चल रहा है; यहाँ कुछ आर्थिक भी चल रहा है।

और ध्यान दें, आर्थिक रूप से भी, वह इन थीसिस में अधिकार का बचाव कर रहे हैं, और वह गरीब लोगों का बचाव कर रहे हैं क्योंकि जहाँ तक उनका सवाल है, चर्च द्वारा उनका फायदा उठाया जा रहा है। इसलिए, वह गरीबों का बचाव कर रहे हैं। इसलिए, यहाँ बहुत कुछ चल रहा है।

इसमें कोई संदेह नहीं है। यहाँ जो कुछ हो रहा है वह आश्चर्यजनक है। लेकिन यह घटना एक तरह से सुधार की शुरुआत है।

लेकिन हम इस घटना को उचित संदर्भ में रखना चाहते हैं। ठीक है, क्या हम 95 थीसिस तक और उसके बाद भी ठीक हैं? क्या इस बारे में कोई सवाल है कि भोगों का यह पूरा मामला कहाँ जा रहा था? ठीक है, हाँ, जैसी। ठीक है, ठीक है।

ऐसा लगता है, आप सही हैं, आप सही हैं, यह तुरंत रक्षात्मक लगता है। लूथर के बारे में यही एक बात है: उसे परवाह नहीं थी कि उसने किसे नाराज़ किया है। अगर वह सच बोल रहा था और

धार्मिक रूप से सही बोल रहा था और गरीबों की आर्थिक रूप से रक्षा कर रहा था, तो वह इसे सामने लाने के लिए तैयार था।

तो, लूथर के पास लियो एक्स के साथ व्यक्तिगत रूप से कोई खास काम नहीं था, लेकिन पोप के कार्यालय का मानना था कि पोप का कार्यालय बाइबिल का नहीं था। इसलिए, पोप का पूरा कार्यालय लूथर के लिए बहुत परेशान करने वाला है। लेकिन आप सही हैं, और यह भाषा थोड़ी भड़काऊ है।

और जब लियो एक्स ने 95 थीसिस देखी, तो वह उनसे बहुत परेशान हो गया। यह थोड़ा भड़काऊ है। और लूथर भी ऐसा ही था।

लेकिन साथ ही, क्योंकि वह धर्मशास्त्र के शिक्षक हैं, उन्हें लगता है कि यह मेरा काम है। इसे प्रकाश में लाना और इस पर अच्छी चर्चा करना मेरा काम है। लेकिन आप सही कह रहे हैं, लोग नाराज़ हो गए।

पोप को इससे नाराजगी हुई, दरअसल। हाँ। यहाँ कुछ और भी है, हाँ।

क्या उन्होंने अपने 95 सिद्धांतों को धर्मशास्त्र पर आधारित किया था ? बिलकुल सही। उन्होंने उन्हें मूल रूप से धर्मशास्त्र पर आधारित किया था। वे भोगों की पूरी व्यवस्था को चुनौती दे रहे थे।

और, ज़ाहिर है, अगर आप पहेली के उस हिस्से को चुनौती देना शुरू करते हैं, तो आप प्रायश्चित को भी चुनौती देंगे। आप अतिरेक के कामों को चुनौती देंगे। आप पाप की दो प्रकृतियों को चुनौती देंगे।

मेरा मतलब है, एक तरह से, 95 थीसिस के साथ, अब हाउस ऑफ कार्ड्स का पर्दाफाश हो गया है, और चीजें बिखरने लगी हैं। क्योंकि एक चीज एक चुनौती है, लेकिन वह ऐसा नहीं कर रहा है क्योंकि वह अब रोमन कैथोलिक नहीं रहना चाहता है।

उनका मानना है कि रोमन कैथोलिक चर्च को भंग कर देना चाहिए या ऐसा ही कुछ होना चाहिए। वह एक धर्मशास्त्री के रूप में अपने पेशे के प्रति वफादार रहने के लिए ऐसा कर रहे हैं। इन बातों को प्रकाश में लाएँ।

आइए उन पर चर्चा करें, और फिर शायद इससे कुछ अच्छा निकलकर आए। हाँ। 95 थीसिस पढ़ना दिलचस्प है।

ऐसा करने में ज़्यादा समय नहीं लगता। इन्हें पढ़ना काफ़ी दिलचस्प है। हम जिस स्थिति में हैं, उसके संदर्भ में चुनौती कुछ और है।

ठीक है? ठीक है। अब, हम जो करना चाहते हैं वह नंबर ई को देखना है, जो कि रिफॉर्मेशन की प्रतिक्रिया है। रिफॉर्मेशन ने कैसे प्रतिक्रिया दी? अब जब हम पहेली के चार टुकड़े देख सकते हैं

और मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च कैसा था, तो रिफॉर्मेशन ने इन सब पर कैसे प्रतिक्रिया दी? ठीक है।

खैर, यहाँ मैं चार या पाँच बातें बताना चाहता हूँ। पहली बात जो मैं बताना चाहता हूँ वह यह है कि हम अक्सर कहते हैं कि धर्मसुधार की लड़ाई आस्था द्वारा औचित्य की प्रकृति पर लड़ी गई थी, और यही धर्मसुधार के लिए युद्ध का मैदान बन गया। हमने इसे शीर्षक में भी इस्तेमाल किया है, मध्यकालीन रोमन कैथोलिक धर्म और औचित्य की प्रकृति।

यह सच है। लूथर और बाद में केल्विन जैसे लोग रोमन कैथोलिकों की औचित्य की धारणा को चुनौती दे रहे हैं। यह सच है।

लेकिन मैंने हमेशा सोचा है कि यह अतिशयोक्ति है क्योंकि मुझे लगता है कि यहाँ एक और मुद्दा है जिसे चुनौती दी जा रही है। मुझे लगता है कि यह उतना ही महत्वपूर्ण मुद्दा है, और वह है आश्वासन। जिस बात को वास्तव में चुनौती दी जा रही है वह आश्वासन का मुद्दा है क्योंकि मामले का तथ्य यह है कि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक दुनिया में लोगों को यह आश्वासन नहीं दिया जा सकता था कि वे ईश्वर की संतान हैं।

वे शांत हृदय और शांत मन नहीं रख सकते थे कि वे ईश्वर की संतान हैं और किसी दिन जब वे मरेंगे, तो वे ईश्वर के पास जाएँगे। वे हमेशा इस बात को लेकर चिंतित रहते थे कि इस जीवन में किए गए पापों के कारण उन्हें क्या सज़ा मिलेगी। वे हमेशा इस बात को लेकर चिंतित रहते थे कि शायद उन्होंने कोई ऐसा नश्वर पाप किया हो जिसे वे भूल गए हों या जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया हो, और इसलिए, वे मृत्यु के तुरंत बाद नरक में जाने वाले थे।

वे हमेशा इस बात को लेकर चिंतित रहते थे कि मरने के बाद हज़ारों साल तक उन्हें यातनाएँ सहनी पड़ेंगी, उसके बाद ही वे जाकर परमेश्वर से मिल पाएँगे। इसलिए, सुधार का एक बुनियादी मुद्दा, लूथर जैसे लोगों का एक बुनियादी मुद्दा, आश्वासन का मुद्दा था। क्या मैं निश्चित हो सकता हूँ कि मैं परमेश्वर का बच्चा हूँ? क्या मैं इस जीवन में और अगले जीवन में निश्चित हो सकता हूँ कि मैं परमेश्वर का बच्चा हूँ और मरने के बाद मैं परमेश्वर के पास जाऊँगा? तो, ठीक है।

एक अर्थ में, रोमन कैथोलिक चर्च एक चर्च के रूप में, एक संस्था के रूप में, उन्हें यह आश्वासन देने में सक्षम नहीं था क्योंकि रोमन कैथोलिक चर्च उन्हें यह नहीं बता सकता था कि उन्हें कितने समय तक यातना-स्थल में रहना होगा। मेरा मतलब है, भगवान यह जानते हैं। रोमन कैथोलिक चर्च अधिकांश भाग के लिए पूर्ण भोग के साथ उनकी मदद नहीं कर सका।

तो, एक तरह से, रोमन कैथोलिक चर्च ने यह अपने ऊपर लाया, यह आश्वासन की कमी। तो, व्याख्यान संख्या ई के संदर्भ में, सुधारकों को अब क्या करना है, सुधार को अब क्या करना है, उस आश्वासन की कमी का जवाब देना है। हम इस आश्वासन की कमी का जवाब कैसे देंगे? हम लोगों को वह आश्वासन कैसे देंगे जो हमें लगता है कि बाइबल उन्हें देती है? और ऐसे कुछ तरीके हैं जिनका मैं तब प्रतिक्रिया के संदर्भ में उल्लेख करना चाहूँगा।

ठीक है? तो, समस्या आश्वासन की है। हम इसका जवाब कैसे दें? ठीक है। पहला जवाब यह है कि न केवल आप एक विश्वासी के रूप में मुक्त होते हैं।

अब, यह लूथर का व्याख्यान या उपदेश है या केल्विन का व्याख्यान या उपदेश है, इसलिए आप सुन सकते हैं। यह ऐसी बात है जो वे कहेंगे। न केवल आप एक विश्वासी के रूप में छुड़ाए गए हैं, बल्कि आप अपने छुटकारे के बारे में सुनिश्चित हो सकते हैं क्योंकि छुटकारे ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप अपने द्वारा किए गए किसी भी काम से प्राप्त करते हैं।

क्रूस पर मसीह के पूर्ण कार्य द्वारा आपके लिए मुक्ति पहले ही प्राप्त हो चुकी है। तो यह बहुत आम बात होगी। आप जानते हैं, आप निश्चित हो सकते हैं कि आपको मुक्ति मिल गई है। आप निश्चित हो सकते हैं कि आप बच गए हैं।

ठीक है। मैं इसके तीन उदाहरण देता हूँ। पहला वह अंश है जिसे हमने पढ़ा, यूहन्ना 5, और खास तौर पर यूहन्ना 5.24। तो, मैं तीन उदाहरण दूंगा। वे सभी यूहन्ना के सुसमाचार से हैं, लेकिन यूहन्ना 5.24। देखिए हमने आज सुबह क्या पढ़ा।

यीशु यह कह रहे हैं, सच-सच मैं तुमसे कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनता है और मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, उसके पास अनन्त जीवन है। उसके पास अनन्त जीवन है। उस पर न्याय नहीं होता, बल्कि वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर चुका है।

तो आप कल्पना कर सकते हैं कि लूथर इस तरह के एक अंश पर उपदेश दे रहा है या केल्विन इस तरह के एक अंश पर उपदेश दे रहा है, लोगों को बता रहा है कि वे इस बारे में आश्वस्त हो सकते हैं। मैं आपको दो अन्य अंश देता हूँ, बस उन्हें नोट कर लें, और फिर जब आपको मौका मिले तो आप उन्हें देख सकते हैं। लेकिन यूहन्ना 3.36, तो अगर आप इसे और 1 यूहन्ना 1:7 को लिख लें। तो, ये सभी अंश इस महान आश्वासन से संबंधित हैं।

यूहन्ना 3:36, 1 यूहन्ना 1:7. ठीक है, तो यह एक जवाब है। पहला जवाब यूहन्ना 5 है, खास तौर पर श्लोक 24. हमने आज सुबह थोड़ा लंबा अंश पढ़ा, लेकिन यूहन्ना 5.24. ठीक है, तो यह एक जवाब है।

तो, आप केल्विन और लूथर को इस बारे में लिखते हुए सुन सकते हैं। ठीक है, दूसरा जवाब। लूथर और केल्विन इन लोगों से कहते हैं कि आपके छुड़ाए जाने के बाद, आपको छुड़ाया जाता है।

मसीह अपने लोगों को छुड़ाने में सक्षम है। लेकिन आप उसके प्रति उसकी वफ़ादारी के कारण छुड़ाए गए हैं। आप जो काम कर रहे हैं, उसके कारण आपको छुड़ाए जाने की स्थिति में नहीं रखा जा सकता।

यह वह चीज़ नहीं है जो आपको छुटकारे के काम में बनाए रखती है। आप जो अच्छे काम कर रहे हैं वे अद्भुत हैं क्योंकि वे आपके छुटकारे का संकेत हैं। लेकिन वे अच्छे काम ही नहीं हैं जो आपको उसकी हथेली में बनाए रखते हैं।

वे आपको पुनर्जीवित करने या सुरक्षित रखने वाली चीजें नहीं हैं। इसलिए, इसका सामान्य शीर्षक है संतों की दृढ़ता। संतों की दृढ़ता।

इसलिए, वे संतों की दृढ़ता का प्रचार करते हैं। लूथर और केल्विन संतों की दृढ़ता का प्रचार करते हैं। लेकिन यहाँ संतों की दृढ़ता के अंतर्गत एक हालाँकि है।

जब हम संतों की दृढ़ता के बारे में बात करते हैं, तो हम सोचते हैं कि इसका मतलब है कि मैं ईश्वर को थामे रहने में दृढ़ हूँ। ईश्वर नीचे की ओर पहुँच रहे हैं, और मैंने उन्हें अपने हाथों से पकड़ लिया है, और मैं ईश्वर को थामे रखने के लिए वास्तव में कड़ी मेहनत कर रहा हूँ। कभी-कभी, मुझे ऐसा लगता है कि मैं ईश्वर के हाथों से फिसल रहा हूँ, और मैं बस उनकी उंगलियों के सिरे को महसूस करता हूँ, और मैं फिसल रहा हूँ।

ऐसा इसलिए है क्योंकि हम दृढ़ता के बारे में शायद इसी तरह सोचते हैं। लेकिन सुधारकों ने संतों की दृढ़ता के बारे में ऐसा नहीं सोचा था। संतों की दृढ़ता का मतलब यह नहीं था कि मुझे ईश्वर पर पकड़ बनाए रखने में परेशानी हो रही है।

संतों की दृढ़ता ईश्वर की अपने विश्वासियों को थामे रखने की दृढ़ता थी। तो, यह ईश्वर की दृढ़ता है। यह हमारी नहीं है।

इसलिए परमेश्वर ने हमें अपनी बाहों में ले रखा है, और वह हमें अपनी बाहों में रखता है ताकि हम परमेश्वर को पकड़े न रहें; यह परमेश्वर है जो हमें पकड़े हुए है। तो यह दूसरा तरीका है जिससे उन्होंने प्रतिक्रिया की। मैं आपको इसके लिए एक उदाहरण देता हूँ, और वह है यूहन्ना 10:28, और 29।

अगर आप इसे लिख लें, तो आप इसे देख सकते हैं। लेकिन यूहन्ना 10:28 और 29. तीसरा, तीसरा तरीका जिससे वे इस सब पर जोर देना चाहते थे, वह यह था कि वे चाहते थे कि लोग न केवल बचाए जाएँ और छुड़ाए जाएँ, बल्कि यह भी जानें कि उन्हें छुड़ाया गया है।

वे चाहते थे कि लोग इस बात की गवाही दें कि आप छुड़ाए गए हैं। इसलिए, वे चाहते थे कि लोग इस बात की गवाही दें कि वे मसीह के छुड़ाए हुए लोग हैं। रोमन कैथोलिकों के लिए ऐसा करना कठिन था क्योंकि वे खुद को ईश्वर के साथ उस रिश्ते में नहीं सोच सकते थे क्योंकि वे हमेशा पाप करते रहते थे और उन्हें हमेशा पाप के लिए दंड देने की आवश्यकता होती थी।

लेकिन वे चाहते थे कि उन्हें पता चले कि वे बच गए हैं। ठीक है, चौथा तरीका, चौथा तरीका। यह चौथा तरीका बहुत महत्वपूर्ण है।

आप लूथर को फिर से मंच से चिल्लाते हुए सुन सकते हैं, लेकिन पापमोचन जैसी कोई चीज़ नहीं है। पापमोचन अस्तित्व में नहीं है। यह मनगढ़ंत है।

अब, जब लूथर और केल्विन और अन्य लोग इसका प्रचार कर रहे थे, तो आप लोगों को राहत की सांस लेते हुए सुन सकते थे कि वे बाइबल, बौद्धिक और अनुभवात्मक रूप से आश्चर्य थे कि शुद्धिकरण जैसी कोई चीज़ नहीं है। आप लोगों को सांस लेते हुए सुन सकते हैं। वाह, यह अच्छी खबर है क्योंकि अब मुझे पता है कि मैं ईश्वर के किसी भी निर्णय के अधीन नहीं हूँ। मुझे पता है कि अब मेरे पास अनंत जीवन है।

यह स्वर्ग में भी जारी रहेगा और आगे भी जारी रहेगा। और मैं जानता हूँ कि मेरे कोई भी रिश्तेदार पापमोचन में नहीं हैं। मेरे कोई भी दोस्त पापमोचन में नहीं हैं।

शुद्धिकरण जैसी कोई चीज़ नहीं है। इसलिए एक बार जब सुधारक लोगों को मंच से और लेखन से इस बारे में समझाने में सक्षम हो गए, तो यह बहुत महत्वपूर्ण हो गया। इसलिए, कोई शुद्धिकरण नहीं है।

ठीक है, अंत में, इस सारे आश्वासन की कमी और हर चीज़ का जवाब देने का एक पाँचवाँ तरीका है, और वह है औचित्य, जो ईश्वर की कृपा से है। कृपा का संदेश। फिर से, मुझे लगता है कि जब लोगों ने यह संदेश सुना तो उन्हें आसानी से साँस लेने में मदद मिली।

हम अनुग्रह से धर्मी ठहराए गए हैं। हम परमेश्वर के अनुग्रह से उसकी संतान हैं। यह उसके अनुग्रह से ही है कि वह हमें बचाता है।

हम जो काम करते हैं, वे उस अनुग्रह का संकेत हैं, लेकिन हम उसकी कृपा से बच जाते हैं। इसलिए अब मुझे उस तरह के डर में नहीं रहना पड़ेगा, जिसमें मैं जी रहा था, ऐसा मध्ययुगीन रोमन कैथोलिकों ने कहा था। और यह अनुग्रह का शब्द था, और यह वास्तव में इन लोगों के लिए एक अच्छा शब्द था।

तो, यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि पूरे यूरोप में उन्हें राहत की सांस मिल रही है क्योंकि वे आश्वासन का यह संदेश सुन रहे हैं। और आप उन्हें देख सकते हैं, अगर वे अपना पूरा जीवन मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक के रूप में जीते रहे हैं, तो आप उन्हें यह कहते हुए देख सकते हैं, यह मेरे लिए अच्छी खबर है। यह सुसमाचार की अच्छी खबर है।

अब, मुझे बस पढ़ने दो। मैं यहाँ एक किताब से एक छोटा सा भाग पढ़ना चाहता हूँ, और फिर देखते हैं कि क्या हम मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म के बारे में कोई सवाल पूछना चाहते हैं, कि यह लोगों को कैसा लगता था, वे इसके तहत कैसे रहते थे, सुधारक कैसे आए और उन्हें किस तरह से मुक्त किया। लेकिन अगर मैं एक तरह का पैराग्राफ पढ़ सकता हूँ। यह देखना पर्याप्त नहीं है कि, सुधार में, बाद के मध्य युग के चर्च में कुछ दुर्व्यवहारों और पतन के कुछ उदाहरणों के खिलाफ केवल एक प्रतिक्रिया थी।

पुनर्जागरण के पोपों के दरबार में चाहे कितना भी भ्रष्टाचार क्यों न हो, और चाहे भोगों, अवशेषों और इस तरह की चीज़ों के माध्यम से लोगों को धोखा देना कितना भी भयानक क्यों न हो, ये चीज़ें अपने आप में सुधार की ओर नहीं ले जातीं। जहाँ तक सामान्य पतन का सवाल है, इसके कई कारण थे जिन्हें यहाँ अनदेखा किया जा सकता है। हालाँकि, इस संदर्भ में यह ध्यान रखना

महत्वपूर्ण है कि अंधविश्वास, भोगों की व्यवस्था, तीर्थयात्रा और बाकी सब, अंतिम विश्लेषण में, विद्वत्तावाद और पूरे मध्ययुगीन चर्च के धर्मशास्त्र में कमी का परिणाम हैं।

चर्च उद्धार के वास्तविक आश्वासन के लिए मनुष्य की इच्छा को संतुष्ट करने में असमर्थ था। और इसीलिए मैं कहता हूँ कि महान युद्ध आश्वासन की लड़ाई पर था। चर्च उद्धार के वास्तविक आश्वासन के लिए मनुष्य की इच्छा को संतुष्ट करने में असमर्थ था।

चर्च ने सिखाया कि मोक्ष की निश्चितता केवल ईश्वर द्वारा व्यक्ति को दिए गए विशेष रहस्योद्घाटन से ही प्राप्त होती है। लेकिन ईश्वर से ऐसे विशेष रहस्योद्घाटन की मांग करना भी अनुचित माना जाता था। औसत ईसाई ईश्वर की कृपापूर्ण स्वीकृति की आशा कर सकता था यदि वह नियमित रूप से कैथोलिक चर्च के संस्कार प्राप्त करता और कोई नश्वर पाप नहीं करता।

हालाँकि, चर्च की शिक्षा या उसके व्यवहार में ऐसे व्यक्ति के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया था जो चर्च द्वारा स्वीकृत औसत ईसाई होने से संतुष्ट नहीं था और इसके बजाय ईश्वर की माँग को उसकी सभी कट्टरता में गंभीरता से लेता था। तब कैथोलिक शिक्षा के अनुसार, मनुष्य का औचित्य आंशिक रूप से स्वयं में पाई जाने वाली धार्मिकता पर निर्भर करता था। और इस धार्मिकता के लिए, कर्म बहुत महत्वपूर्ण हैं।

हालाँकि, लूथर के दिनों में, जो व्यक्ति अपने पाप से परेशान था, उसे बस इतना बताया जाता था कि उसे अपनी आशा ईश्वर पर रखनी चाहिए। उद्धार की निश्चितता अज्ञात थी। और उद्धार की ऐसी निश्चितता के लिए बहुत लंबे समय तक इंतजार करना अभिमानी माना जाता था।

इसका उद्देश्य भय और आशा के बीच संतुलन स्थापित करना था। इसलिए, उद्धार का आश्वासन, यही सुधार के संदर्भ में सब कुछ था, और सुधारक साथ आए, और यही उन्होंने उपदेश दिया। ठीक है, मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रुकता हूँ।

व्याख्यान 1, मध्यकालीन रोमन कैथोलिक धर्म और औचित्य की प्रकृति। यहाँ कुछ भी? क्या हम समझते हैं कि क्या हो रहा था? क्या हम समझते हैं कि यह सुधारकों, लूथर और केल्विन जैसे लोगों के लिए इतना समस्याग्रस्त क्यों था? क्या हम समझते हैं कि उन्होंने इस आश्वासन वाली चीज़ों और बाकी सब चीज़ों पर कैसे प्रतिक्रिया दी? लेकिन, कुछ भी, क्या कोई भी इस सामान पर चर्चा करना चाहता है? कोई? कोई सवाल? चर्चा? ऐसी चीज़ें जिनके बारे में आप निश्चित नहीं हैं कि हमने किस पर व्याख्यान दिया? हमने किस पर व्याख्यान दिया और मध्यकालीन रोमन कैथोलिक चर्च में यहाँ क्या चल रहा था, इस बारे में स्पष्ट? क्या हर कोई इससे सहमत है? ठीक है। ठीक है।

हाँ। आश्वासन का पूरा व्यवसाय, आपका मतलब है? आश्वासन का पूरा अंतर्निहित व्यवसाय क्या है? ठीक है। खैर, पहला जवाब यह था कि यह आपके शाश्वत जीवन की गारंटी हो सकती है, एक निश्चितता, आपके शाश्वत जीवन की निश्चितता।

यूहन्ना 5:29 के अंश में, यूहन्ना 5:24 में, जो मेरा वचन सुनता है और मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, उसका अनन्त जीवन है। यह न्याय की बात नहीं है। वह पहले ही मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर चुका है।

तो जोहानिन इस बात पर जोर देता है कि आपके पास पहले से ही अनन्त जीवन है और मृत्यु इस अनन्त जीवन से एक संक्रमण है जो आपके पास पहले से ही है और पूरी तरह से अनन्त जीवन में और इसी तरह। क्या यह समझ में आता है? यहाँ कुछ और है? क्या आप ठीक हैं? ठीक है। ठीक है।

तो चलिए जॉन की बात करते हैं। जॉन कैल्विन। मैं भी लेक्चर 2, जॉन कैल्विन का धर्मशास्त्र में हूँ।

यहाँ बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति हैं। मुझे व्याख्यान 2, जॉन कैल्विन का धर्मशास्त्र पर जाना चाहिए। और आप देख सकते हैं कि मैं तीन काम करने जा रहा हूँ।

मैं उनके जीवन के बारे में कुछ बातें कहने जा रहा हूँ। मैं बस उनकी जीवनी को इस कहानी में शामिल करना चाहता हूँ जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। फिर, हम उनके द्वारा किए गए सामान्य कार्यों के बारे में बात करने जा रहे हैं।

और फिर, हम उनके धर्मशास्त्र के कुछ पहलुओं के बारे में बात करने जा रहे हैं। मेरा मतलब है, हमें जॉन कैल्विन के धर्मशास्त्र को समझने के लिए पूरे 16 सप्ताह की आवश्यकता होगी। इसलिए, हमें उनके धर्मशास्त्र से कुछ चुनना होगा और देखना होगा कि उनका धर्मशास्त्र मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च के खिलाफ किस तरह से खड़ा होता है और वह दूसरी पीढ़ी में सुधार का नेतृत्व करने में सक्षम क्यों था और इसी तरह।

ठीक है? तो, क्या आप इससे सहमत हैं? तो, सबसे पहले, बस कुछ बातें, उनके जीवन के बारे में कुछ खास बातें जिन पर आपको ध्यान देना चाहिए जो मुझे लगता है कि जीवनी के लिहाज से महत्वपूर्ण हैं। ठीक है। शुरू करने के लिए, मेरे पास यहाँ कुछ जगहें भी हैं।

मैं कुछ नाम और जगहें बताने जा रहा हूँ। सबसे पहले, उनका जन्म फ्रांस के नोयोन में हुआ है। नोयोन।

क्या यहाँ कोई फ्रेंच भाषा का छात्र है? अब बोलो। क्या यहाँ कोई द्विभाषी लोग हैं? फ्रेंच बोलते हैं? ठीक है। तो वह फ्रांस में पैदा हुआ था।

ठीक है। यह बहुत, बहुत दिलचस्प है। अब, यह मेरे लिए बहुत दिलचस्प है क्योंकि जॉन कैल्विन फ्रांस में पैदा हुए थे, और उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और बाकी सब चीजों के कारण, वे मार्टिन लूथर के बिल्कुल विपरीत व्यक्तित्व वाले हैं।

जॉन कैल्विन एक छात्र और फ्रांसीसी विचारक थे जो लैटिन और फ्रेंच में लिखते थे और अपने शब्दों के चयन को लेकर बहुत सावधान रहते थे। मार्टिन लूथर एक तात्कालिक उपदेशक थे,

अपने शब्दों के चयन को लेकर बिल्कुल भी सावधान नहीं रहते थे और बहुत बिखरे हुए थे। जॉन कैल्विन बहुत संगठित होने वाले थे।

लूथर बिल्कुल भी संगठित नहीं होने जा रहा है। मेरे लिए यह बहुत ही रोचक है कि भगवान ने इस सुधार को शुरू करने के लिए दो अलग-अलग व्यक्तित्व वाले दो लोगों को चुना। मेरा मतलब है, ऐसा नहीं हो सकता, यह दो लोग नहीं हो सकते जो एक दूसरे से इतने अलग हों।

तो, ठीक है। तो, वह वहाँ है, फ्रांस में पैदा हुआ। ठीक है।

अब, वह विभिन्न विश्वविद्यालयों में गया है, और मूल रूप से, वह कानून का अध्ययन करता है, जो बहुत महत्वपूर्ण भी है। तो यहाँ कुछ विश्वविद्यालय हैं जिनका मैंने उल्लेख किया है, बस कुछ विश्वविद्यालय जहाँ वह गया था: ऑर्लियंस, बॉर्गेट, और पेरिस विश्वविद्यालय। तो, वह मूल रूप से कानून का अध्ययन करने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में गया था।

तो, उन्हें एक वकील के रूप में प्रशिक्षित किया गया था। अब, क्या यह आपको आश्चर्यचकित करता है? नहीं, यह आपको आश्चर्यचकित नहीं करता क्योंकि जब आप कैल्विन को देखते हैं, जब आप कैल्विन को पढ़ते हैं, या जब आप उनके उपदेशों को पढ़ते हैं, तो वह एक वकील की तरह अपने मामले पर बहस करते हैं। तो, वह आपको ईसाई धर्म के लिए लगभग एक कानूनी तर्क देता है।

इसलिए, उन्होंने कानून का अध्ययन किया और साथ ही उन्होंने मानवतावाद का भी अध्ययन किया, जिसे आम तौर पर मानवतावाद के रूप में लेबल किया जाता था। अब, मानवतावाद मानवतावाद होता, जो वास्तव में प्राचीन यूनानियों और रोमनों के लेखन के लिए एक तरह का सम्मान था। यह ग्रीक और रोमन साहित्य, दर्शन, सोच और इसी तरह के अन्य का एक तरह का नवीनीकरण है।

लेकिन वह, हम क्या कहेंगे? उसने कानून और मानवतावाद के अध्ययन में उदारतापूर्वक प्रशिक्षण लिया है। उसने उदारतापूर्वक प्रशिक्षण लिया है। अब, मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ कि हम अभी भी मध्ययुगीन दुनिया में वापस आ गए हैं, इसलिए यह हमारी दुनिया से एक अलग दुनिया है।

मैं उन विश्वविद्यालयों के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ जहाँ वे गए थे। उस दुनिया में, आप किसी खास प्रोफेसर से पढ़ने या किसी खास कोर्स को पढ़ने के लिए विश्वविद्यालय जाते थे। विश्वविद्यालय आपको सहारा नहीं देता था।

आप बस विश्वविद्यालय जाते थे, और फिर अगर आपको कोई दूसरा कोर्स पढ़ने की ज़रूरत होती थी, तो आप शायद किसी दूसरे विश्वविद्यालय में जाते थे और इसी तरह आगे भी। यह हमारी आज की दुनिया और हमारे विश्वविद्यालय जीवन से बिल्कुल अलग है। तो यह बस ऐसा ही था, और यही उन्होंने किया।

ठीक है, अब उनके जीवन के संदर्भ में, उनके जीवन के संदर्भ में एक और बात, हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रशिक्षण पेरिस विश्वविद्यालय में था। इसलिए, जिस चीज में हम रुचि रखते हैं, वह पेरिस विश्वविद्यालय था जो जॉन कैल्विन के लिए एक तरह का मोड़ था। पेरिस विश्वविद्यालय में जो हुआ वह दो चीजें थीं।

खैर, तो आप उसे पेरिस में एक विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में देखते हैं, लेकिन दो चीजें हुईं। नंबर एक, उसने मार्टिन लूथर नाम के एक व्यक्ति के लेखन को पढ़ना शुरू किया। मार्टिन लूथर, यह आदमी कौन है, वह क्या लिख रहा है और मुझे उसके बारे में क्या जानना चाहिए? इसलिए, उसने मार्टिन लूथर को पढ़ना शुरू किया, और वह उसके लेखन से बहुत प्रभावित हुआ, इसमें कोई संदेह नहीं है।

ठीक है, और दूसरा, उन्होंने खुद हमें 1533 में बताया, उन्होंने अपनी भाषा में जो अनुभव किया, वह 1533 में अचानक धर्म परिवर्तन जैसा था। अब, उनका जन्म रोमन कैथोलिक चर्च में हुआ था। वह नाममात्र के रोमन कैथोलिक थे, विशेष रूप से धार्मिक नहीं, लेकिन 1533 में, उन्होंने अचानक धर्म परिवर्तन का अनुभव किया। इस तरह से वे इसका वर्णन करते हैं, भगवान ने मेरे दिल को वश में किया और उसे नम्र बना दिया।

मेरा दिल ऐसे मामलों के प्रति इतना कठोर था जितना कि एक युवा व्यक्ति में होने की उम्मीद नहीं थी। ठीक है, तो जॉन कैल्विन 1533 में आस्तिक बन गया। तो यह महत्वपूर्ण है।

तो, पेरिस में दो बातें, लूथर का अध्ययन करना और फिर बाइबल के माध्यम से आस्तिक बनना, लेकिन लूथर को पढ़ना और इसी तरह की अन्य बातें भी। तो ये दो बातें महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, उसके जीवन के संदर्भ में एक और बात, और यहीं से वह आगे बढ़ता है। ठीक है, जॉन कैल्विन ने फैसला किया कि उसे रोमन कैथोलिक चर्च छोड़ना होगा।

तो, यह लूथर से अलग है। लूथर को वास्तव में रोमन कैथोलिक चर्च से बाहर निकाल दिया गया था। उसे रोमन कैथोलिक चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया था, जबकि जॉन कैल्विन ने रोमन कैथोलिक चर्च छोड़ने का फैसला किया था।

ठीक है, रोमन कैथोलिक चर्च को छोड़ना बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए मुझे चर्च छोड़ने का वर्णन करना होगा। मुझे लगता है कि दूसरे दिन हमने जादुई मार्करों की तलाश की थी और हमें यहाँ कोई नहीं मिला।

तो, वहाँ एक है, वहाँ एक है, क्या नीचे एक है, ओह, क्या यहाँ कहीं कोई जादुई मार्कर है? बढ़िया, अगर कोई है, तो यह बहुत बढ़िया होगा। लेकिन, ओह, धन्यवाद, सर। ठीक है, मुझे यह करना है; मुझे किसी से इसकी पावरपॉइंट बनाने में मदद लेनी है।

फिर मुझे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। ठीक है, यहाँ रोमन कैथोलिक विचार है। यहाँ कैल्विन के बारे में रोमन कैथोलिक समझ है।

केल्विन एक रोमन कैथोलिक था, और वह चर्च से भटक गया था। उसे जो करना चाहिए था वह एक सच्चे आस्तिक के रूप में सच्चे चर्च में रहना था। इसलिए, रोमन कैथोलिक तरह की कहानी जॉन केल्विन के भटकने के बारे में है।

वह चला गया, वह भटक गया, और उसे सच्चे चर्च में रहना चाहिए था। यह केल्विन की समझ नहीं है कि उसके अपने जीवन में क्या हुआ। तो यहाँ केल्विन की समझ है कि क्या हुआ।

रोमन कैथोलिक चर्च के बारे में केल्विन की समझ यह थी कि रोमन कैथोलिक चर्च ही भटक गया था। इसलिए, सच्चे चर्च में बने रहने के लिए, उसे रोमन कैथोलिक चर्च छोड़ना पड़ा। इसलिए, रोमन कैथोलिक चर्च को छोड़कर, वह बाइबिल के चर्च के साथ रह रहा है।

तो, जॉन केल्विन और रोमन कैथोलिक चर्च के साथ जो हो रहा है, उसके बारे में आपको दो अलग-अलग राय मिलती हैं। कैथोलिक राय, वह भटक गया। केल्विन की राय है कि रोमन कैथोलिक चर्च अब सच्चा बाइबिल चर्च नहीं है।

इसलिए, मुझे सच्चे चर्च के साथ बने रहने के लिए रोमन कैथोलिक चर्च छोड़ना पड़ा। इसलिए, यहाँ जो कुछ हुआ, उसके संदर्भ में यह वास्तव में असहमति का विषय था। हालाँकि, जॉन केल्विन ने रोमन कैथोलिक चर्च छोड़ने और एक ब्रेक लेने का फैसला किया।

तो, ठीक है। क्या होता है कि वह बेसल में पहुँच जाता है, और यहाँ यह ओवरहेड पर है। वह बेसल में पहुँच जाता है, और आप जानते हैं, हम अभी कुछ ऐसी जगहें देख रहे हैं जहाँ केल्विन गया था, और मुझे नहीं पता कि मैंने वहाँ एक हवाई जहाज क्यों रखा।

मैं, मैं इसे ठीक से समझा नहीं सकता, लेकिन मुझे लगा कि यह यात्रा का प्रतिनिधित्व करता है, भले ही यह उनके दिनों में यात्रा का प्रतिनिधित्व नहीं करता। इसलिए, मुझे नहीं पता। वैसे भी, यह तो है।

तो, वह बेसल में जाकर बस जाता है। ठीक है। बेसल क्यों? खैर, जब सुधार शुरू हुआ, जब सुधार की तरह विस्फोट हुआ, तो आपको यूरोप में बहुत अलग रोमन कैथोलिक क्षेत्र मिले और आपको यूरोप में बहुत अलग सुधार, प्रोटेस्टेंट और सुधारित क्षेत्र मिले।

वहाँ एक वास्तविक विभाजन रेखा थी और इसलिए बेसल एक सुधारित शहर था। बेसल एक शहर था और बेसल, स्विटजरलैंड, एक ऐसा शहर था जिसने सुधार को अपनाया था। इसलिए, यह बहुत स्वाभाविक है कि वह किसी ऐसी जगह पर जाने वाला है जहाँ वह अब एक प्रोटेस्टेंट के रूप में घर जैसा महसूस करने वाला है, और वह तय करता है कि वह बेसल जाएगा, जो कि स्विटजरलैंड में था, जो कि है और है।

तो, ठीक है। संक्षेप में, बेसल में, 1536, वह एक महत्वपूर्ण तारीख है। वैसे, 1536 में, जॉन केल्विन ने अपने इंस्टीट्यूट्स ऑफ द क्रिश्चियन रिलीजन लिखना शुरू किया। मुझे बस देखने दो।

मुझे नहीं लगता, नहीं, इसके लिए खेद है। उन्होंने अपना इंस्टिट्यूट लिखना शुरू किया, जो 1636 में उनके इंस्टिट्यूट ऑफ द क्रिश्चियन रिलीजन के नाम से जाना गया। ठीक है।

अब, संस्थानों की शुरुआत किस रूप में हुई, और हम बाद में संस्थानों के बारे में भी बात करने जा रहे हैं, यह सुधार धर्मशास्त्र का स्पष्ट, स्पष्ट बचाव है। इसीलिए उन्होंने बेसल में 1536 में अपने संस्थान लिखना शुरू किया। वह सुधार के धर्मशास्त्र का स्पष्ट रूप से बचाव करने की कोशिश कर रहे हैं।

तो, यही कारण है कि यह इतना महत्वपूर्ण था। ठीक है। अब, अगर मैं यहाँ आ सकता हूँ तो मैं पिछले पावरपॉइंट पर वापस आऊँ।

फैरेल नाम के एक व्यक्ति और मैंने तारीखें लिखी हैं ताकि आपको पता चल सके। ये कोई याद रखने वाली तारीखें नहीं हैं, लेकिन ये आपको सिर्फ यह बताती हैं कि ये लोग कब रहते थे। लेकिन विलियम फैरेल नाम के एक व्यक्ति, हम अपने समय में इस नाम का उच्चारण इसी तरह करते हैं, लेकिन विलियम फैरेल नाम के एक व्यक्ति। विलियम फैरेल ने जिनेवा में सुधार का आयोजन किया, और जिनेवा भी स्विट्ज़रलैंड में था, और यह बेसल की तरह एक सुधार शहर बन गया।

क्या होता है कि फैरेल कैल्विन को जेनेवा में शामिल होने और जेनेवा में सुधार को मजबूत करने के लिए राजी कर लेता है। तो, फैरेल, कैल्विन का दोस्त, कैल्विन, आप जानते हैं, और वह एक साथ हो जाता है, और कैल्विन सुधार को मजबूत करने के लिए स्विट्ज़रलैंड में जेनेवा जाता है। अब, क्या होता है, लंबी कहानी संक्षेप में, कि जेनेवा में बहुत से लोग फैरेल और कैल्विन का विरोध करते हैं।

वे सोचते हैं कि उनके प्रोटेस्टेंट नैतिकता का पालन करना बहुत मुश्किल है। वे सोचते हैं कि उनका प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र बहुत गहरा है। उनकी प्रोटेस्टेंट तरह की नैतिक माँगों का पालन करना बहुत मुश्किल है।

आप हम पर ये थोप रहे हैं, और हमें यह पसंद नहीं है। इसलिए, उन्होंने उसे वस्तुतः शहर से बाहर निकाल दिया। इसलिए जेनेवा की यात्रा और सुधार को मजबूत करने में मदद करना फैरेल के साथ सफल नहीं रहा, और फैरेल और कैल्विन दोनों एक तरह से शहर से बाहर निकल गए।

इसलिए, उन्हें शहर से निकाल दिया गया। इसलिए, जिनेवा, ऐसा नहीं लगता कि जिनेवा एक आदर्श सुधार शहर बनने जा रहा है। अगर हम यहाँ नागरिक जीवन में इस सुधार सिद्धांत को स्थापित नहीं कर पाते हैं, तो ऐसा नहीं लगता कि हम यहाँ कुछ ज़्यादा कर पाएँगे।

तो वे चले गए। ठीक है। ठीक है।

अब, जॉन कैल्विन के जाने के बाद क्या होता है? जॉन कैल्विन स्ट्रासबर्ग जाता है। जॉन कैल्विन स्ट्रासबर्ग में ही समाप्त होता है। ठीक है।

जॉन कैल्विन स्ट्रासबर्ग क्यों गए? वे दो कारणों से स्ट्रासबर्ग जाते हैं। एक कारण यह है कि स्ट्रासबर्ग एक फ्रेंच भाषी शहर और एक सुधारवादी शहर था। इसलिए यह जॉन कैल्विन के लिए बिल्कुल सही था।

अगर यह फ्रेंच-भाषी और सुधारवादी है, तो वह फ्रेंच बोलता है, और वह इसमें मदद कर सकता है और वहां चल रहे सुधारवाद को प्रभावित कर सकता है। तो, यह था; मुझे लगता है कि उसने शायद सोचा था कि वह फ्रेंच-भाषी और सुधारवादी होने के कारण अपना बाकी जीवन वहीं रहने वाला था, और वह बहुत सारा लेखन वगैरह कर सकता था। इसलिए वह स्ट्रासबर्ग चला गया, और मुझे लगता है कि वह सोचता है कि वह हमेशा के लिए वहीं बस जाएगा।

स्ट्रासबर्ग में ही उनकी मुलाकात मार्टिन बुटज़र नाम के एक व्यक्ति से हुई, और इसे बुटज़र के बजाय बुसर कहा जाता है। तो, बुटज़र, यह ऐसा है जैसे कि यह बटर है, लेकिन स्ट्रासबर्ग में ही उनकी मुलाकात मार्टिन बुसर से हुई। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुलाकात थी क्योंकि मार्टिन बुटज़र ने कैल्विन को उनके धर्मशास्त्र को आकार देने और बनाने में मदद की थी।

मार्टिन बुटज़र जॉन कैल्विन पर सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक रूप से प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक हैं। इसलिए, स्ट्रासबर्ग में बिताया गया समय जॉन कैल्विन के लिए बहुत-बहुत फ़ायदेमंद साबित हुआ। जैसा कि मैंने कहा, एक समय ऐसा भी था जब मुझे लगता है कि उन्होंने सोचा था कि वे हमेशा के लिए वहीं रहेंगे।

उनके लेखन के संदर्भ में, जब वे स्ट्रासबर्ग में थे, तो दो चीजें पूरी हुईं। ठीक है, नंबर एक, वे संस्थानों के बारे में विस्तार से बताते हैं और वे अपने जीवन के बाकी समय में भी ऐसा ही करते रहेंगे। नंबर एक, उन्होंने बेसल में संस्थानों का प्रकाशन शुरू किया।

जब वह स्ट्रासबर्ग में होता है, तो वह संस्थानों के बारे में विस्तार से बताना शुरू कर देता है। इसलिए, वह संस्थानों को पुनः प्रकाशित करता है, उन्हें थोड़ा और विस्तृत करता है, अधिक चर्चा करता है, और इसी तरह। ठीक है, वह जो दूसरा काम करता है वह बहुत महत्वपूर्ण है।

तो, हम इस पर ध्यान देना चाहते हैं। उन्होंने रोमनों की पुस्तक पर एक टिप्पणी लिखी है। यह उनकी पहली टिप्पणी है।

उन्होंने रोमियों की पुस्तक पर एक टिप्पणी लिखी क्योंकि उन्हें लगा कि रोमियों को समझना बहुत ज़रूरी है। उसके बाद, उन्होंने बाइबल की बहुत सी पुस्तकों पर बहुत सारी टिप्पणियाँ लिखीं। वह बाइबल की हर पुस्तक पर टिप्पणी नहीं लिखते, लेकिन उन्होंने बाइबल की पुस्तकों पर बहुत सारी टिप्पणियाँ लिखीं।

तो, स्ट्रासबर्ग ने वास्तव में उनके करियर को बढ़ाया, एक तरह से, उनके लेखन और प्रकाशन करियर को, न केवल संस्थानों के लिए बल्कि रोमनों के लिए भी। ठीक है, मैं कैल्विन के जीवन के बारे में बात खत्म कर देता हूँ, और फिर हम देखेंगे कि क्या उनके काम पर जाने से पहले उनके जीवन के बारे में हमारे पास कुछ सवाल हैं। कैल्विन अंततः चले जाते हैं, और उन्हें 1541 में जिनेवा वापस बुलाया जाता है।

जिनेवा से प्रतिनिधि कैल्विन आते हैं। यहाँ, वह स्ट्रासबर्ग में बसा हुआ है। वे कैल्विन आते हैं, और कहते हैं, शायद हम गलत थे।

शायद हमें जिनेवा में आपकी ज़रूरत है। शायद हमें आपकी ज़रूरत है कि आप जिनेवा आएँ और बाइबल, सुधार के सिद्धांतों और इसी तरह के दूसरे सिद्धांतों के अनुसार जीने में हमारी मदद करें। और इसलिए उन्होंने उसे वापस आने के लिए आमंत्रित किया, और कैल्विन वापस गया, और वह जिनेवा का नागरिक बन गया और जिनेवा में जीवन पर उसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा।

आपको कैल्विन को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं देखना चाहिए, जो जिनेवा में राजनीतिज्ञ नहीं था। जिनेवा में उसका कोई राजनीतिक कार्यालय नहीं था। इसलिए, उसके पास वह अधिकार नहीं था।

उनका अधिकार मूल रूप से उनके प्रचार मंत्रालय और उनके लेखन और शिक्षण के माध्यम से था। यही वह अधिकार था जो उन्हें जिनेवा के लोगों को पवित्रशास्त्र और सुधार के धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार अपने जीवन को संचालित करने के लिए मनाने की कोशिश करने के लिए था। इसलिए, उनके पास अधिकार था, लेकिन उनके पास राजनीतिक अधिकार नहीं था।

उनके पास जो अधिकार था वह एक बाइबिल धर्मशास्त्री, एक उपदेशक, एक शिक्षक के रूप में था। यही अधिकार उन्हें जिनेवा में प्राप्त था। उन्होंने लगभग हर दिन उपदेश दिया, और शहर के लोग आकर कैल्विन का उपदेश सुनते थे। फिर उनकी मृत्यु जिनेवा में हुई और उन्हें जिनेवा में ही दफनाया गया।

तो यह बहुत महत्वपूर्ण हो गया। मैं सिर्फ जिनेवा में हुई एक घटना का जिक्र करना चाहता हूँ। शायद मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रुक जाऊँ।

सबसे पहले, क्या यहाँ कोई प्रश्न है, मैं उनके जीवन की एक घटना का उल्लेख करना चाहता हूँ। कैल्विन, 1509 से 15, मुझे खुद ही इसे देखना होगा, 1564. 1509 से 1564.

और उनकी मृत्यु जिनेवा में हुई, और उन्होंने एक अचिह्नित कब्र में दफनाने के लिए कहा। वह नहीं चाहते थे कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी प्रशंसा की जाए। इसलिए उन्हें एक अचिह्नित कब्र में दफनाया गया।

कैल्विन के बारे में अब तक कुछ और। ठीक है। मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रुकता हूँ क्योंकि आप लिखते रहे हैं और क्लिक करते रहे हैं और सब कुछ करते रहे हैं, और कभी-कभी मैं आपको पाँच सेकंड का ब्रेक देता हूँ, और शुक्रवार को, मैं आपको दस सेकंड का ब्रेक देता हूँ।

तो, यह शुक्रवार है इसलिए आप इसका आनंद ले सकते हैं। तो बस, मुझे नहीं पता कि यह टेपिंग में कैसे आता है, टेड, लेकिन मैं लोगों को थोड़ा ब्रेक देना पसंद करता हूँ और अगर आपको ज़रूरत हो तो आराम करना और आराम करना। आपका दिल आशीर्वादित है।

हम यह कर सकते हैं। यह संभव है। ठीक है।

अच्छा। जिनेवा के बारे में एक और बात: मैं उनके द्वारा किए जा रहे काम के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ और फिर उनके सिद्धांतों के बारे में कुछ बातें। पाठ्यक्रम के लिए सिद्धांत सबसे महत्वपूर्ण चीज हैं।

लेकिन जिनेवा के बारे में एक और बात। इससे उस व्यक्ति के बारे में थोड़ा-बहुत पता चलता है। उस समय एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति था, जिसका नाम माइकल सर्वाइटिस था, और माइकल सर्वाइटिस की तारीखें भी हैं।

हम ठीक से नहीं जानते कि उनका जन्म कब हुआ था, लेकिन लगभग 1511 में। माइकल सर्वाइटिस मूल रूप से एक यूनिटेरियन थे। वह त्रिदेवों में विश्वास नहीं करते थे, और वे जिनेवा आए और जिनेवा में उन्हें सूली पर जला दिया गया।

अब, और अक्सर, लोग कहेंगे, जॉन कैल्विन को देखो। जॉन कैल्विन किस तरह का व्यक्ति था, और क्या वह किसी को सूली पर जला सकता था? मुझे यहाँ विराम दो, कैल्विन। तुमने ऐसा क्यों किया? हम इसे यथासंभव स्पष्ट करना चाहते हैं।

सूली पर जलाया जाना जॉन कैल्विन का काम नहीं था। इसलिए, जब सर्वाइटिस जिनेवा आया और उसे सूली पर जला दिया गया, तो यह जॉन कैल्विन का काम नहीं था। वास्तव में, जॉन कैल्विन सार्वजनिक रूप से ट्रिनिटी के बारे में उससे बहस करने को तैयार था, लेकिन उसने सर्वाइटिस को जिनेवा न आने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि वह जानता था कि अगर सर्वाइटिस जिनेवा आया तो क्या होगा।

इसलिए, उसने उससे कहा, मत आओ। अपने साथ ऐसा मत करो। और सर्वाइटिस इतना जिद्दी था कि उसने कहा, हाँ, मैं जिनेवा आ रहा हूँ, और मैं तुम्हारे साथ सार्वजनिक रूप से त्रित्व पर बहस करने जा रहा हूँ क्योंकि मैं इसमें विश्वास नहीं करता।

इसलिए, उन्होंने उसे सूली पर जला दिया। तो, यह नगर परिषद थी जिसने सर्वाइटिस को सूली पर जला दिया। इसका कैल्विन से कोई लेना-देना नहीं था।

यह एक नगर परिषद थी। वास्तव में, कैल्विन ने जेल में जाने के बाद उनसे मुलाकात की थी। कैल्विन ने जेल में जाकर उनसे मुलाकात भी की थी, लेकिन इसका जॉन कैल्विन से कोई लेना-देना नहीं था।

तो, मुझे उम्मीद है कि आप इस कहानी में विश्वास के अच्छे रक्षक बनने के लिए तैयार हैं कि कैल्विन ने किसी को सूली पर जला दिया क्योंकि यह एक सच्ची कहानी नहीं है। इसलिए उसने सर्वाइटिस को जिनेवा न आने के लिए मनाने की कोशिश की। लेकिन यह सर्वाइटिस की सूली पर जलाने की कहानी है।

उसके पास सिर्फ़ नैतिक अधिकार और नैतिक प्रभाव था, लेकिन देश के कानूनों पर उसका कोई प्रभाव नहीं था। नगर परिषद पर उसका कोई प्रभाव नहीं था। तो, और यह एक अच्छी बात है जैसी।

मध्ययुगीन दुनिया में लोगों को सूली पर क्यों जलाया जाता था? मध्ययुगीन दुनिया में विधर्मियों को सूली पर क्यों जलाया जाता था? तो, अगर सर्वाइटिस को विधर्मी माना जाता है, तो वे उसे सूली पर जला देते हैं। उन्होंने ऐसा क्यों किया? नहीं, उन्होंने ऐसा सिर्फ़ इसलिए नहीं किया क्योंकि उन्हें उसका धर्मशास्त्र पसंद नहीं था। और क्यों उन्होंने ऐसा किया? क्या कोई इस पर अनुमान लगाना चाहता है? आपने लोगों को सूली पर क्यों जलाया? हाँ।

हाँ, बिल्कुल। उन्हें डर है कि विधर्मी लोग सामाजिक अव्यवस्था को जन्म देंगे। वे समाज में अव्यवस्था लाएँगे।

सर्वाइटिस की तरह इन खंभों को जलाना एक व्यवस्थित समाज को बनाए रखने के लिए था क्योंकि जिन चीज़ों के बारे में वह बात कर रहा है, वे लोगों को परेशान और परेशान कर रही हैं और सब कुछ, और विवाद और इसी तरह की अन्य चीज़ें हैं, और हम ऐसा नहीं कर सकते हैं और जिनेवा में एक व्यवस्थित समाज बनाए रख सकते हैं। इसलिए, परिषद ने व्यवस्था बनाए रखने के लिए खंभे को जला दिया। इसलिए कैल्विन ने सही धर्मशास्त्र को बनाए रखने के लिए ऐसा नहीं किया।

परिषद ने व्यवस्था बनाए रखने के लिए ऐसा किया। इसलिए, कैल्विन जिनेवा में रहता है। मरने से पहले तक वह जिनेवा में ही था और यही उसका जीवन था।

ठीक है। क्या आप उनके जीवन से सहमत हैं? आप जो किताब पढ़ रहे हैं, उसमें आपको उनके जीवन के बारे में बहुत कुछ देखने को मिलेगा। लेकिन मैं सिर्फ़ इतना चाहता हूँ कि पूरे कोर्स के दौरान, मैं शायद, मुझे नहीं पता, चार या पाँच लोगों को चुनूँ, ताकि आपको उनकी जीवनी की कहानी बता सकूँ, क्योंकि यह कहानी उस धर्मशास्त्र में चल रही चीज़ों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

तो, ठीक है। चलिए, कुछ मिनट के लिए नंबर बी के बारे में बात करते हैं। चलिए, कैल्विन के काम के बारे में बात करते हैं।

कैल्विन ने खुद को किस तरह के काम के लिए समर्पित किया? फिर, सबसे महत्वपूर्ण बात है उसका धर्मशास्त्र। ठीक है। कुछ बातें।

नंबर एक, कैल्विन सुधार में महान मध्यस्थ थे। कैल्विन वह व्यक्ति थे जो सुधार में विपरीत ध्रुवों के बीच खड़े थे, और उन्होंने सुधार नेताओं के बीच मतभेदों को सुलझाने के लिए बहुत सारी ऊर्जा समर्पित की। इसलिए कैल्विन ने एक बहुत ही शानदार मध्यस्थ की भूमिका निभाई, और आप कैल्विन को कई क्षेत्रों में वह भूमिका निभाते हुए देखते हैं, जैसे कि प्रभु भोज।

हम इस बारे में तब बात करेंगे जब हम उनके धर्मशास्त्र के बारे में जानेंगे। लेकिन लोगों को प्रभु के भोज के बारे में कैसे सोचना चाहिए? खैर, कैल्विन ने यहाँ दो चरम सीमाओं के बीच एक मध्य मार्ग अपनाने की कोशिश की और उस मामले को सुलझाने में मदद की। तो यह जॉन कैल्विन के बारे में एक बात है।

जो भी महसूस करते हैं। हालाँकि, आप जॉन कैल्विन के बारे में एक व्यक्ति के रूप में जो भी महसूस करते हैं, आपको एक अर्थ में अधिक अनुकूल प्रकार के सुधार का निर्माण करने के लिए उन्हें श्रेय देना होगा। ठीक है, यह नंबर एक है। नंबर दो, कैल्विन वास्तव में एक पहाड़ी पर भगवान का एक शहर बनाना चाहते थे।

प्यूरिटन लोग बोस्टन आने पर इस शब्द का इस्तेमाल करते थे, लेकिन कैल्विन एक पहाड़ी पर ईश्वर का शहर बनाना चाहते थे जो सुधार के लिए एक उदाहरण होगा, सुधारवादी जीवन और विचार के लिए एक उदाहरण होगा। और वह चाहते थे कि जिनेवा वह शहर बने। वह चाहते थे कि जिनेवा वह जगह, यह जगह, ईश्वर का यह शहर बने।

अब, जैसा कि हमने बताया, यह धर्मतंत्र नहीं था, क्योंकि जिनेवा में उनके पास कोई राजनीतिक शक्ति नहीं थी। उनके पास नैतिक शक्ति थी, लेकिन उनके पास कोई राजनीतिक शक्ति नहीं थी। इसलिए यह धर्मतंत्र नहीं था, लेकिन यह ईश्वर का एक दृश्यमान शहर था और इसी तरह की अन्य चीजें थीं।

ठीक है, ऐसा करने के लिए, उन्होंने जो किया वह जिनेवा अकादमी नामक संस्था की स्थापना थी। इसलिए उन्होंने जिनेवा अकादमी की शुरुआत की। जिनेवा अकादमी वह जगह थी जहाँ लोग जिनेवा आते थे, और वे जॉन कैल्विन और अन्य लोगों से धर्मशास्त्र के बारे में चर्चा करते और सीखते थे।

फिर, वे अपने-अपने स्थानों पर वापस जाकर उस अच्छे बाइबिल धर्मशास्त्र या व्यवस्थित धर्मशास्त्र आदि का प्रसार करते थे। इसलिए, पूरे पश्चिमी यूरोप से लोग जॉन कैल्विन और अन्य लोगों से सीखने के लिए जिनेवा अकादमी में आते थे। तो यह इस संदेश को प्रसारित करने का एक तरीका था कि जिनेवा को क्या होना चाहिए, एक पहाड़ी पर भगवान के शहर के रूप में एक मॉडल, और इसी तरह।

यह जेनेवा अकादमी तक संदेश पहुंचाने का एक तरीका था। ठीक है, नंबर तीन। नंबर तीन, कैल्विन था, और मैं इस शब्द का बहुत सावधानी से उपयोग करता हूँ क्योंकि इस शब्द के बारे में बहस चल रही है।

तो, कैल्विन धर्मशास्त्र, सुधार धर्मशास्त्र के एक महान व्यवस्थितकर्ता थे। उन्होंने सुधार धर्मशास्त्र को संगठित किया। और बहुत से लोगों को यह शब्द पसंद नहीं है।

सिस्टमेटाइज़र शब्द इसलिए पसंद नहीं है क्योंकि यह बहुत स्थिर लगता है। यह मध्ययुगीन विद्वत्तावाद जैसा लगता है, और मध्ययुगीन विद्वत्तावादी धर्मशास्त्र के बहुत ही सूक्ष्म बिंदुओं और

इसी तरह की अन्य बातों पर बहस करते थे। इसलिए बहुत से लोगों को यह शब्द पसंद नहीं है, लेकिन मुझे पसंद है।

मुझे यह शब्द पसंद है। वह एक व्यवस्थितकर्ता थे। शायद अगर आप आयोजक शब्द का उपयोग करना चाहें, तो वह धर्मशास्त्र के एक शानदार आयोजक थे।

तो, इस तरह से, वह लूथर से पूरी तरह अलग था। लूथर कोई व्यवस्थित करने वाला या आयोजक नहीं था। लूथर के दिमाग में जो भी आता था, वही लिख दिया जाता था।

यह उपदेश दिया गया था। वह धर्मशास्त्र के मामले में हर जगह मौजूद था। लूथर के साथ आपको जो करना था, वह था उसके जीवन भर के प्रमुख बिंदुओं को खोजना और उसने जो सिखाया, उसके अनुसार चलना।

लेकिन कैल्विन एक शानदार आयोजक और व्यवस्था निर्माता थे। इसलिए, यह सुधार के लिए एक वास्तविक योगदान है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

ठीक है, और चौथा, कैल्विन ने भी सुधार के लिए एक खेल में क्या किया। कैल्विन ने धर्मशास्त्र के बारे में कैसे जाना जाए, इसके लिए संगठनात्मक सिद्धांत दिए। यदि आप यह कहना चाहते हैं कि कैल्विन ने धर्मशास्त्र करने के लिए एक पद्धति विकसित की, तो कुछ बुनियादी सिद्धांत हैं जिनका उपयोग आप धर्मशास्त्र करने के लिए कर सकते हैं।

ठीक है? और अगर आप उन सिद्धांतों को अमल में लाते हैं, तो आप बाइबल के प्रति और परमेश्वर ने जो आपको जानना चाहा है उसके प्रति वफ़ादार रहेंगे। ठीक है, मैं यहाँ सिर्फ़ एक का ज़िक्र करने जा रहा हूँ, और शायद सोमवार को जब हम वापस आएँगे तो मैं कुछ और भी बताऊँगा। मुझे सिर्फ़ एक का ज़िक्र करने दीजिए।

यह ईश्वर के ज्ञान और स्वयं के ज्ञान का सिद्धांत है। यह आत्म-ज्ञान, ईश्वर के ज्ञान और स्वयं के ज्ञान का सिद्धांत है। शायद मैं इसे यहाँ एक बार और इस्तेमाल कर सकूँ।

यह पॉवरपॉइंट पर डालने के लिए भी एक अच्छा विचार होगा। मुझे यहाँ भगवान को रखना चाहिए, और मुझे यहाँ हमें रखना चाहिए। कैल्विन पद्धतिगत रूप से, जब भगवान के ज्ञान और खुद के ज्ञान की बात आई, तो कैल्विन ने यही कहा।

हमारे पास जो भी ज्ञान है, वह ईश्वर के ज्ञान से शुरू होता है, और इससे हमें खुद के बारे में ज्ञान मिलता है। लेकिन साथ ही, जितना ज़्यादा हम अपने बारे में जानते हैं, उतना ही ज़्यादा हम ईश्वर के बारे में जानते हैं। तो इस तरह से संस्थानों की शुरुआत होती है।

हमारे पास जो भी ज्ञान है, यानी ईश्वर और खुद के बारे में ज्ञान, वह ईश्वर और खुद के ज्ञान से शुरू होता है। लेकिन फिर वह कहता है, लेकिन कौन सा ज्ञान पहले आता है? यह कहना वास्तव में असंभव है। क्या हम पहले ईश्वर को जानते हैं, और क्योंकि हम ईश्वर को पहले जानते हैं, इसलिए

हम खुद को जानते हैं? या क्या हमें खुद के बारे में अच्छा ज्ञान है, और खुद को जानने से, क्या हमें ईश्वर के बारे में कुछ ज्ञान है? यह कौन सा है? खैर, कैल्विन के लिए, यह एक पूर्ण चक्र है।

यह बात बार-बार घूमती रहती है। लेकिन कैल्विन के लिए, पद्धतिगत रूप से, इसी तरह से उन्होंने अपने संस्थानों की शुरुआत की। इसलिए, ईश्वर को जानना, खुद को जानना, खुद को जानना, ईश्वर को जानना, एक दूसरे की ओर स्वतः ही ले जाता है, और यह एक अद्भुत चक्र है जो जीवन में चलता रहता है।

अब, जब भी मैं विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए इस पर व्याख्यान दे रहा हूँ, और निश्चित रूप से मुख्य ईसाई धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम के लिए, यह एक प्रतिसंस्कृति संदेश है। यह एक प्रतिसंस्कृति संदेश क्यों है? यह एक प्रतिसंस्कृति संदेश है। क्या मैं अब उपदेश दे रहा हूँ, या मैं पढ़ा रहा हूँ? मुझे यकीन नहीं है कि मैं अब क्या कर रहा हूँ, तो क्या मैंने सीमा पार कर ली है? शायद मैंने ऐसा किया है।

यह एक प्रतिसंस्कृति संदेश क्यों है? क्योंकि आज के समय में, जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसमें बहुत से लोग ईश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहते हैं। वे ईश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। वे ईश्वर के बारे में जानना नहीं चाहते हैं।

वे ईश्वर में विश्वास नहीं करते। खैर, यह कैल्विन के लिए एक समस्या है। कैल्विन कहेंगे, फिर आप अपने बारे में कैसे जान सकते हैं? यदि आप अपने निर्माता के बारे में नहीं जानते, जिसने आपको बनाया है, तो आप अपने बारे में कुछ भी कैसे जान सकते हैं? आप नहीं जान सकते।

यदि आप इसे ईश्वर को जानने के संदर्भ में नहीं रखते हैं तो स्वयं के बारे में ज्ञान बहुत सीमित हो जाएगा। इसलिए कैल्विन से एक प्रतिसंस्कृति संदेश मिलता है। इस बारे में कोई संदेह नहीं है, निश्चित रूप से जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसमें। लेकिन वैसे भी, उन्होंने कुछ ऐसे संगठित सिद्धांत विकसित किए जिनके द्वारा आपको धर्मशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

मैं इसका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि इसी तरह से संस्थानों की शुरुआत हुई थी, लेकिन यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण आयोजन सिद्धांत था। मुझे लगता है कि यह अभी भी है। मुझे लगता है कि धर्मशास्त्र का गंभीरता से अध्ययन करने के लिए, ईश्वर को जानना और खुद को जानना एक चक्रीय चीज़ है जिसमें आप लगातार बने रहना चाहते हैं।

आप लगातार उस चक्र में बने रहना चाहते हैं। जितना ज़्यादा आप अपने बारे में जानेंगे, उतना ज़्यादा आप ईश्वर के बारे में जानेंगे। जितना ज़्यादा आप अपने बारे में जानेंगे।

ठीक है। मैं यहाँ कुछ घोषणाएँ करके रुकता हूँ।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह मार्टिन लूथर से जॉन कैल्विन तक का सत्र 4 (सत्र 3 गायब है) है।